शीत-युद्व की राजनीति

Sheela Devi

Political Science

युद्वोतर काल को अर्न्तराष्टीय राजनीति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथय संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के मध्य गहरा और भंयकर मतभेद रहा है। द्वितीय विश्वयुद्व के बाद ये दो ही राज्य प्रथम कोटिकी विश्व की महान शक्तिया रह गयी थी। वैसे युद्व मे सोवियत संघ की भी आपार बर्बादी हुई थी, लेकिन जर्मनी की पराजित करने के कारण सारे यूरोप मे उसका दवाब कायम हो गया था। युद्व की समाप्ति के समय सोवियत लाल सेना मध्य यूरोप तक के क्षेत्र पर अपना अधिकार किये बैठे थे।

द्वितीय विश्व युद्व ने सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका को दोनयी शक्तियो के रूप मे पैदा किया। दोनो महायाक्तिया युद्व से प्राप्त लाभ की स्थिति को बनाये रखना चाहती थी और अपने प्रभाव के विस्तार के लिए उत्सुक थी। उनकी आकाक्षाओ की पुर्ति के मार्ग मे एक शक्ति दूसरी के लिए बाधक थी। और दोनो इन बाधाओ को हटाना चाहते थे। लेकिन इसके लिए युद्व का सहारा नही लिया जा सकता। द्वितीय विश्व युद्व के समाप्त होन के बाद स्थिति ऐसी हो गई थी कि कि अब एक तृतीय युद्व का बोंझ नही उठाया जा सकता। अतः उन्होने अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए राजनीतिक पचार का मार्ग पकडा, जिसे शीत युद्व कहते है। पश्चिमी राष्टो ने संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व मे सोवियत संघ की निन्दा करनी आरंभ की और सोवियत संघ ने दूसरी तरफ उन राष्टो पर गोलियो की बौछार शुरू कर दी। इन परिस्थितियो मे शीत युद्व की उत्पति हुई।

शीत-युद्व की उत्पति का पहला कारण युद्व काल मे दोनो पक्षो का एक दूसरे के प्रति बढता हुआ सन्देह और अविश्वास था। ऐसा देखा गया कि प्रायः सभी युद्वो के बाद युद्व कालीन मित्र राज एक दूसरे केविरोधी या कट्टर दुशमन बन जाते है। प्रथम विश्व युद्व के बाद फ्रांस ओर ब्रिटेन के बीच इसी प्रकार का मतभेद हो गया था, पर इस बार संयुक्त राज्य अमेरिका और सेवियत संघ मे युद्व के समय से ही सन्देह और मतभेद शुरू हो गया था। इसका एक प्रबल कारण द्वितीय मोर्चे से सम्बधित था। जिस समय युद्व चल रहा था ओर हिटलर सोवियत संघ को दबोचे हुआ था।उस समय स्टालिन अपने मित्र

राज्यो से पश्चिमी यूरोप मे हिटलर के विरूद्व एक दूसरा मोर्चा खोलने के लिए बराबर अनुरोध करता था।

1944 के प्रारभ मे जब द्वितीय मोर्चा खालेन की येजना बनने लगा तब स्टालिन की शंका और पुष्ट होने लगी। जिस धोखेबाजी से हिटलर ने सोवियत संघ पर चढाई की थी। उसको ध्यान मे रखकर मास्को के नीति-निर्धारक इस निष्कर्षप र पहुच चुके थे कि यदि यदि सोवियत संघ को भावी खतरो से बचाना हो तो उसे जर्मनी और सोवियत संघ के बीच के देशो पर अपना प्रभुत्व कायम कर लेना अत्यावश्यक है। दूसरे शब्दो मे स्टालिन पूर्वी यूरोप के देशो को सोवियत प्रभाव क्षेत्र मे परिवर्तित कर लेना चाहता था।

युद्व समाप्त होते-होते दोनो पक्षो मे घेर मतभेद उत्पन हो गया। और समय के साथ-साथ इसकी उग्रता भी बढती गई। विभिन्न अर्तराष्ट्रीय घटनाओ, सम्मेलनो आदि मे ये मतभेद प्रकृट होने लगे। इसके बाद समाचार-पत्रो और रेडियो द्वारा भाषण, वाक् युद्व और प्रचार युद्व प्रारंभ हुआ। शीघ्र ही सारी दुनिया दो गुटो मे बँट गई, अमेरिका के नेतृत्व मे पश्चिम गुट और सोवियत सघं के नेतृत्व मे कम्युनिस्ट गुट। पश्चिम गुट अपने आप को स्वतन्त्र विश्व कहने लगा। सोवियत गुट को लौह परदे की उपाधि दी गई। फिर संसार के सामनं अर्तराष्ट्रीय साम्यवाद का हौवा उपस्थित किया गया।

1953 मे शीत युद्व की तीव्रता मे कुछ परिवर्तन आया। इस युद्व के महान उन्नायक राष्टपति ट्रुमैन ओर स्टालिन थे। जनवरी 1953 मे आईसनहावर अमेरिका के राष्टपति बने। उनके विदेश सचिव डिलेस अब संयुक्त राज्य अमेरिका के मुख्य निर्धारक हुए। इसी समय 5 मार्च,1953 को स्टालिन की मृत्यु हो गई। अगस्त 1953 मे सोवियत संघ का प्रगथम आणविक परीक्षण हुआ। हथियार क्षेत्र मे दोनो गुटो के मध्य जो खाई थी वह धीरे-धीरे कम होने लगी।

इसके बाद हिन्द चीन का प्रश्न 1। फांसीसी साम्राज्यवाद के विरूद्व वहा चलने वाले युद्व मे दोनो गुटो ने अलग-अलग पक्षो का समर्थन किया। शीत युद्व के कारण हिन्द चीन का प्रश्न अर्तराट्रीय प्रश्न बन गया। फिर अमेरिका ने साम्यवाद के विस्तार को रोकने के लिए सैनिक समझौते और अन्य संगठनो करो स्थापित करने नीति अपनाई तथा नाटो, सीटो तथा बगदाद पैक्ट बनाए। सोवियत संघ ने इनकी बडी कडी आलोचना की और इनके जवाब मे बार्मा पैक्ट कायम कर दिया।

1 मई 1960 को अमेरिका एक वायुयान सोवियत सीमा का अतिक्रमण करके दोहजार किलोमीटर अन्दर घुस गया। जब उसके आक्रमक इरादो का पता स्पष्ट रूप से चल गया तो स्वर्डलोवास्क द्वारा उसे नीचे गिरा दिया गया। विमान के निरीक्षण से पता चला कि यह एक जासूसी का विमान था क्योकि इसमे जासूसी के अनेक यन्त्र और उपकरण पकडे गये। सैभाग्यवंश इस विमान का चालक पावर्स बच गया और पकड लिया गया। उसने इस बात को कबूल किया कि उसे सोवियत सुघ के आकाश मे सैनिक निरीक्षण तथा सैनिक अड्डो की सूचना प्राप्त करने के लिए भेजा गया था।

शिखर सम्मेलन की मांग बहुत दिन से हो रही थी। जब सोवियत प्रधान मंत्री खुश्चव अमेरिका गये ंतो कैम्पडेविड मे राष्टपति आइसनहावर से मुलाकात करने के समय यह निश्चिय हुआ कि पेरिस मे एक शिखर सम्मेलन हो। इस निश्चय के बाद ''शीत युद्व के बर्फ मे पहली दरार'' दीखने लगी। पर्याप्त विमर्श के बाद यह निश्चय हुआ के 16 मर्ह, 1960 को यह सम्मेलन पेरिस मे शुरू हो। इसमे संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन तथा फ्रांस के शासनाध्यक्ष सम्मिलित हो तथा बर्लिन जर्मनी निस्त्रीकरण आदि जटिल अर्न्तराष्ट्रीय समस्याओ पर विचार तथा उनके समाधान का प्रयास किया जाये।

1958 मे क्यूबा मे डा0 फिडेल कैस्ट्रो के नेतृत्व मे एक नयी क्रांतिकारी जनवादी सरकार की स्थापना हुई। इस घटना ने शीत युद्व के इतिहास मे एक नया अध्याय खोला। वर्षो से क्यूबा संयुक्त राज्य अमेरिका के साम्राज्यवाद का चोर शिकार बना हुआ था। उसके आर्थिक जीवन पर अमेरिकी पूँजीपतियो का एकाधिकार था। कैस्ट्रो के हाथ मे क्यूबा की सत्ता आने के बाद इस स्थिति मे परिवर्तन न होना अवश्यम्भावी हो गया। समाजवादी व्यवस्था मे विश्वास करने वाला यह कांतिकारी व्यक्ति संयुक्त राज्य के डालर साम्राज्यवाद का घोर विरोधी था। उसने तुरंत ही अपने देश के आर्थिक साधनो का राष्ट्रीयकरण शुरू किया।

संयुक्त राष्ट की साधारण सभा के अधिवेशन मु आये हुए सोवियत प्रधानमन्त्री कोसिजन ने राष्टपति जॉनसन से ग्लासबरो मे मुलाकात की। शुरू मे दिल्ली खवाहिश होने के बावजूद जॉनसन और कोसिजन मे से कोई भी शिखर वार्ता के लिए उत्सुक नही दिखाना चाहता था। पश्चिमी साम्राज्यवादियो से साँठ-गाँठ करने के चीन और अल्बेरिया के प्रकृट आरोपो-टीटो जैसे नेताओ द्वारा मुलायमियत की शिकायत और सशंक अरब देशो की भावनाओ को देखते हुए कोसिजन ने शुरू मे ही बताया कि संयुक्त राष्ट संघ मे वह अपनी बात मनवाने आये है। अमेरिका से कोई लेन-देन का समझौता करने नही।

जॉनसन की ओर से भी कुछ ऐसा ही दृष्टिकोण अपनाया गया, लेकिन एकाएक यह निश्चय हुआ कि ग्लासबरो नगर मे दोनो शासनाध्यक्षमिले तथा वर्तमान समस्या पर विचार विमर्श करे।

पश्चिम एशिया के संकट के अतिरिक्त 1967-68 मे वियतनाम के प्रश्न ने शीत युद्व मे अग्नि का काम किया है। वियतनाम मे चलने वाला सघर्ष शीत युद्व मे उत्तरोतर वृद्वि करता गया। इस प्रश्न को लेकर पश्चिम और पूर्व एक दूसरे पर आरोपो-प्रत्यारोपो की झडी लगाते रहक और अंतर्राष्ट्रीय तनाव मे वृद्वि होती रही। लेकिन अप्रैल 1968 मे राष्टपति जॉनसन द्वारा पुनः अमेरिकी राष्टपति के लिए उम्मीदवार न होने तथा उतरी वियतनाम पर बमबारी रोकने की घोषणा से तनाव मे बहुत कमी आई।

युद्व के इतिहास मे तब आया जब पश्चिमी जर्मनी की सरकार ने निश्चय किया कि मार्च 1969 को फेडरल जर्मनी के राष्टपति का चुनाव पश्चिमी बर्लिन मे समपत्र किया जाये। पूर्वी जर्मनी की सरकार ने इसका विरोध किया। उसका कहना था कि पश्चिम बर्लिन अब भी 1945 के पोट् सडाम समझौते के अधीन है इसलिए पश्चिमी जर्मनी के शासकों को इस तरह के समारोह करके उसे पश्चिमी जर्मनी का ही एक भाग सिद्व करने का कोई अधिकार नही है।

द्वितीय विश्व-युद्व के बाद से यूरोप मे शीत युद्व के मूल मे जर्मनी की समस्या रही है। विश्व युद्व के बाद से पश्चिम जर्मनी और सोवियत संघ मे कभी भी सामान्य सम्बन्ध स्थापित नही हुआ और दोनो गुटो के बीच निरन्तर तनातनी बनी रही। इस तनातनी मे पश्चिम जर्मनी को हमेशा पश्चिम गुट का सूर्थन मिलता रहा। इस परिस्थिति का अन्त करने के लिए 10 अगस्त, 1970 कों पश्चिमी जर्मनी और सोवियत संघ के बीच एक सन्धि हुई। इस सन्धि को फ्रांस के समाचार पत्र लामो ने यूरोपीय इतिहास का ण्क वर्तन बिन्दु माना गया है। उस समझौते से यूरोप मे आशा का एक नया वातावरण पैदा हुआ है। दोनो ने वस्तुस्थिति को मानकर एक दूसरे के खिलाफ शक्ति का प्रयोग न करने का फैसला किया। सारी दुनिया मे इस समझौते का स्वागत किया गया। और यह आशा व्यक्त की गई कि अब यूरोप मे युद्व नही होगा। पूर्व पश्चिम मे सुरक्षा की भावना बढेगी और नाटो तथा बारसा सन्धि संगठन की जरूरत नही रह जायेगी।

लगभग इसी समय एशिया मे शी युद्व के एक प्रमुश कारण कोरिया की समस्या के समाधान का यत्न हुआ। उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया का सम्बन्ध शीत युद्व को प्रारम्भ कराने मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था। लेकिन, 1972 मे कोरिया के इन देशो मे भी स्थिति को सामान्य करने के लिए अनेक कदम उठाये गये। यदद्वि पिछले तीन दशको से कोरिया के दोनो राज्यो के बीच गहरी वैचारिक खाई पैदा हो गई थी और उसको पाटना बहुत कठिन था। फिर भी एकीकरण के प्रश्न पर दोनो के बीच अरसे गुप्त मन्त्रणए हो रही थी। 20 अगस्त,1971 को उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया की रेड क्रास सोसाइटी की एक बैठक हुई जिसमे तय हुआ कि कोरिया युद्व के दौरान जो एक करोड कोरियाई के रिश्तेदार,सम्बन्धी ओर मित्र बिछुड गये थे उनकी अदला बदली की जाए।